कुसुम सरोवर वाले—

बाबा कृष्णदासजी के द्वारा

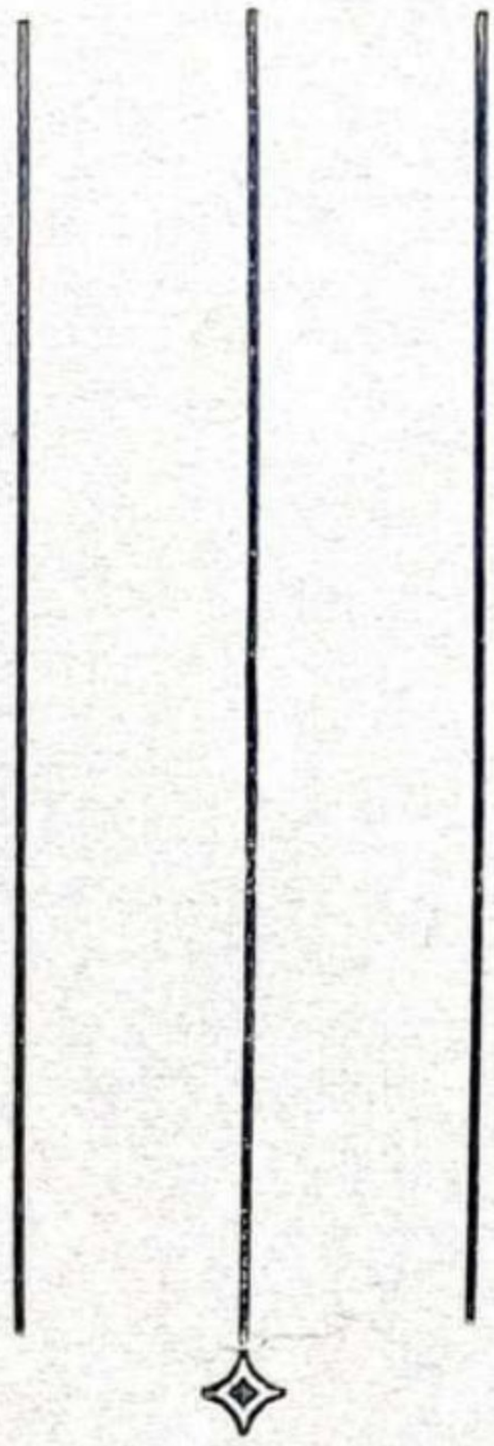

संस्कृत व ब्रज-भाषा में—

प्रकाशित ग्रन्थों की सूची

विश्वम्भरदास, कुसुम सरोवर

पो०—राधाकुण्ड (मथुरा)

सम्बत् २०२३

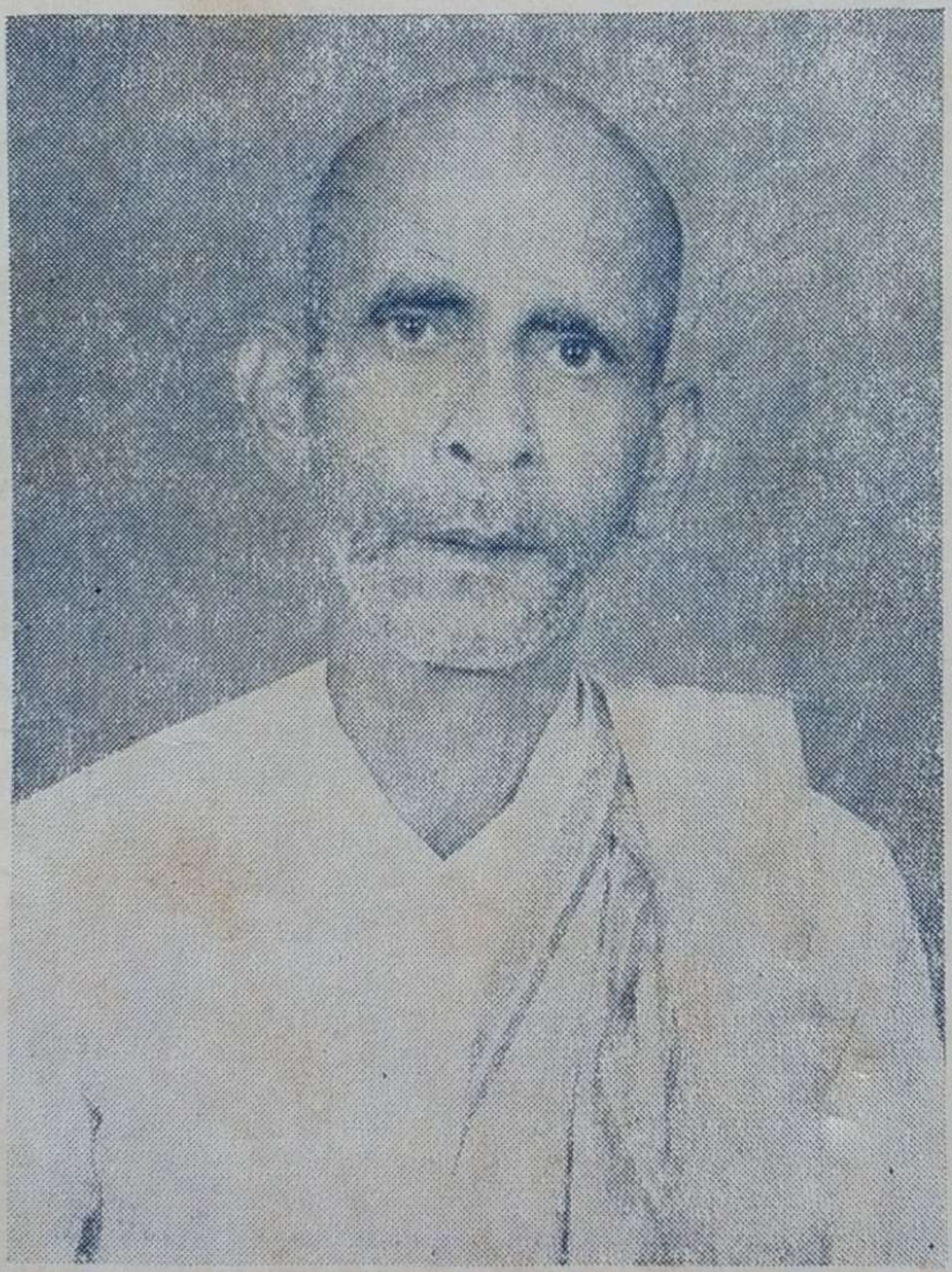

बाबा कृष्णदास जी

बाबाकृष्णदासजी के द्वारा

प्रकाशित ग्रन्थों की सूची:—

१—गोविन्दभाष्य:— महर्षि बेदव्यासजी ने जिन ब्रह्म सूत्रों का प्रणायन किया, उन्ही सूत्रों के भाष्यकार विभिन्न सम्प्रदाय प्रवर्तक आचार्य हुए, वृन्दावनविहारी ठाकुर श्रीगोविन्ददेवजी ने एक दिन स्वप्न में श्रीपादबलदेवविद्याभूषणजी महोदय को इन ब्रह्मसूत्रों पर भाष्य लिखने का उपदेश किया और श्रीपाद बलदेवविद्याभूषणजी ने अत्यल्प समय में इसका भाष्य किया। वेदान्त का यह अद्वितीय ग्रन्थ, अचिन्त्य भेदाभेद परक यह भाष्य, भक्तिसिद्धान्तों का पोषक, यह ग्रन्थ अद्यावधि देवनागरि लिपि में तथा हिन्दी भाषानुवाद सहित अप्राप्य था, इसका प्रकाशन कर बाबाने अचिन्त्य भेदाभेद परक भक्तों को एक निधी दी है। भगवतीभारती के भण्डार में अमूल्यरत्न एवं जिज्ञासुओं को उनका प्राप्तव्य ही दे दिया है। मूल्य ५)

२—ब्रजभक्तिविलास:—ब्रजमण्डल के लुप्त प्राय: तीर्थों का प्राकट्य करने वाले आचार्य महामहिम श्रीनारायणभट्टजीमहाराज की जीवन तपस्या का साफल्य यह ग्रन्थ, ब्रजमण्डलपरिचय की दृष्टि से सर्वोपरि एवं सर्वश्रेष्ठ है। इसमें ब्रजमण्डल के समस्त बन, उपबन, तीर्थ, लीलास्थलों का विस्तार पूर्वक वर्णन तो है ही, उनके अधिष्ठातृदेवता, अनुष्ठान, मन्त्र, स्नान, परिक्रमा, प्रणाम आदि की विधि एवं हर वन, उपवन, तीर्थस्थलों आदि का सीमा विस्तार वर्णन भी है। अत: यह ग्रन्थ ब्रज और ब्रजराजनन्दन के भक्तों के लिये अनन्त रसरूप ही है। अद्यावधि यह ग्रन्थ हिन्दीभाषानुवाद सहित अप्राप्य था अब श्रीबाबामहाराज की कृपा से सर्व सुलभ हो गया है। मूल्य २॥)

३—ग्रन्थरत्नपञ्चकम्:—इसमें रुपगोस्वामी रचित श्रीराधाकृष्णगणाद्देशदीपिका—जिसमें श्रीप्रियाप्रीतम की निकुञ्जलीला,

परिकर एवं वेष भूषा का विचित्र एवं अद्वितीय वर्णन है। हिन्दी के अनेक कवियों ने इसका अनुवाद भी किया है। श्रीपादसनातनगोस्वांमीजी रचित श्रीकृष्णलीलास्तव-में व्रजेन्द्रनन्दन गोविन्द की दशमस्कंदीयलीलओं का क्रम से स्तवन स्वरूप में प्रस्तुती करण विश्व के साहित्य में वेजोड़ है। श्रीकविकर्णपूर महोदय रचित श्रीगौरगणोद्देश दीपिका-ही एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जिसमें श्रीचैतन्यमहाप्रभु के सम्पूर्ण व्रज परिकर का विषद विवेचन है। श्रीपादविश्वनाथचक्रवर्त्ति रचित संकल्पकल्पद्रुम में श्रीराधागोविन्द की सेवा की प्रार्थना की गई है यह रागमार्गी साधकों की निज निधि है। श्रीपादरघुनाथगोस्वामी ने व्रजविलासस्तव-में प्रार्थना रूपमें अतिकारुण्य भाव में व्रज के मुख्य तीर्थों का दर्शन वर्णन किया है। अभी तक यह ग्रन्थ मूल रूप में प्राप्त होने से सर्व साधारणोपयोगि नही थे। बाबामहाराज की अनन्य कृपा से अब यह भाषानुवाद सहित प्रकाशित हो गया है। ये पाँच ग्रन्थ एकही जिल्द में हैं। मूल्य १॥)

४-श्री चैतन्यचन्द्रामृत तथा श्रीसंगीतमाधवः-श्रीश्रीप्रवोधानन्द-सरस्वती पाद रचित यह दोनों ग्रन्थ अभूतपूर्व हैं। चैतन्यचन्द्रामृत में श्रीचैतन्यमहाप्रभु की उत्कर्ष महिमा का वर्णन है। "संगीतमाधव" में जो रस और गीत का समन्वय है इसे पढ़ कर भ्रम हो जाता है कि "गीतगोविन्द" ही है। श्रीप्रियाप्रीतम की निकुञ्जलीला वर्णन इसमें दर्शनीय है। मूल्य १।)

५-हंसदूतः- दूतकाव्य परिपाटी में अध्यात्मिक जगत के सर्वोत्कृष्ट इस ग्रंथ के रचयिता श्रीश्रीपादरूपगोस्वामीजी ने इसमें भगवान् श्रीकृष्ण के विरह में व्यथित ललिता सखी के द्वारा एक हंस कोसंवोधित करते हुए वियोग शृंगार में भक्त हृदय का

विश्लेषण और प्रेम रस की जो निर्झरिणी प्रावाहित की है वह अन्यत्र अप्राप्त ही है। इस पर श्रीयुत गोपालचक्रवर्त्ति पाद की संस्कृतटीका, पन्नालालजी "प्रेमपुञ्ज" की पद्यमय तथा हरेकृष्ण जी "कमलेश" जी की दो हिन्दी टीकाएँ हैं। मूल्य १ ॥)

६–उद्धवसंदेशः–दूतकाव्य परिपाटी में श्रीश्रीपादरूपगोस्वामीजी ने भगवान्कृष्ण के दूत के रूप में उद्धवजी को प्रस्तुत कर श्रीभगवान् कृष्ण के हृदय में गोपियों के प्रति जो प्रेम है, वियोग शृंगार का जो उत्कृष्ट माधुर्य है, वह इस ग्रन्थ की विशेषता है। मू० ॥)

७–श्रीगोवर्द्धनभट्टग्रन्थावलीः–महामहिम पण्डितप्रवर श्रीपाद गोवर्द्धनभट्टजी के तीन ग्रन्थ मधुकेलिवल्ली, श्रीराधाकुण्डस्तव, और श्रीरूपसनातनस्त्रोत्र, इसमें ग्रथित हैं। आनन्दवृन्दाबन-चम्पू में भगवान् की होरीलीला का जो वर्णन है उसका दूसरा सरसतम रूप ही मधुकेलिवल्ली है। श्रीराधाकुण्ड की महिमा की चरम उत्कर्षता जिसमें वर्णित है उस ग्रन्थ का नाम राधा-कुण्डस्तव है। तीसरे ग्रंथ में रूपगोस्वामी एवं श्रीसनातनगोस्वामी की प्रशस्ति वर्णित है। इन तीनों ग्रन्थों को भाषानुवाद सहित छापकर वैष्णव मात्र को व्रज रसामृतपान कराया गया है। मू० ॥)

८–पदाङ्कदूतः–दार्शनिक धुरंधर श्रीश्रीकृष्णदेवसार्वभौम ने दूतकाव्य पारपाटी में "पदाङ्कदूत" जोड़कर संस्कृत साहित्य को मानो एक नवरत्न प्रदान कर दिया। वियोग शृंगारप्रेम निर्भरा-वस्था में श्रीनित्यप्रिया बृषभानुजा श्रीकृष्णपादपद्म को ही दूत बनाकर अपनी विरहव्यथा गोविन्द तक पहुँचाने में तल्लीन हैं। माधुर्य रस का पूर्णपरिपाक और रस निर्झरण का आनन्द मूल, टीका व भाषानुवाद पढ़ने बाले सभी के लिये समान आनन्द-देने वाला यह ग्रन्थ है। मूल्य ॥)

९-शुकदूतः-भगवान् आनन्दकन्द मुकुन्द द्वारिका में बैठे एक शुक को अपने हृदयस्थ गोपीप्रेम को वर्णन करते ब्रज प्रदेश के प्राकृतिक सौन्दर्य को वर्णन करते हुए ब्रजयात्रा को उद्बोधन कर रहे हैं। स्वभाव और ब्रजके प्राकृतिक सौन्दर्य बर्णन के लिये यह अनूपम ग्रन्थ है। संस्कृत में भी अप्राप्य यह ग्रन्थ अब श्रीबाबा-कृष्णदासजी की कृपा से हिन्दीभाषानुवाद सहित भी सर्वसुलभ हो गया है। मूल्य १॥)

१०-ब्रजोत्सवचन्द्रिकाः-यह एक वैष्णव धर्मग्रन्थ है। इसमें भगवान् श्रीनित्यप्रियाप्रीतम के परिकर सहित व प्रत्येक के अलग अभिषेक आदि विधि, उनकी लीलाओं का समय, स्वरूप, स्थान, स्थिति, मर्यादा, सेवा आदि का विशद विवेचन किया गया है। ब्रज के प्रायः सभी देव,तीर्थों, मन्दिरों आदि में सेवा का क्रम इसी ग्रन्थ की देन है। इसे लगभग ४०० बर्ष पूर्व आचार्य श्रीनारायणभट्टजी ने प्रकट किया है। मूल्य १॥)

११-ग्रन्थरत्नत्रयम्:- १-श्रीब्रह्माण्ड पुराणोक्त श्रीकृष्णाष्टोत्तरशत-नामस्तोत्र २-श्रीगौतमीयतन्त्रोक्त गोपालस्तवराज, उक्त दोनो ग्रन्थों पर श्रीयुक्त बृन्दावनदासजी विरचित भाष्य है। दोनों में दार्शनिक तत्वों का सुन्दरतम विवेचन है। साथ में ३-श्रीपाद-नारायणभट्टजी कृत लाडिलेयाष्टक भी प्रकाशित है। यह लाड़िलेय स्वरूप वही हैं जिन श्रीविग्रह की कृपा से भट्टजी ने सम्पूर्ण ब्रज को प्रकाशित किया था। बाबाकृष्णदासजी ने भाषा-नुवाद सहित प्रकाशित कर इसे सर्वसुलभ किया है। मूल्य ॥)

१२--नारायणभट्टचरितामृतः--श्रीपादजानकीप्रसादभट्टविरचित इस ग्रन्थमें ब्रज के लुप्त प्राय तीर्थों के प्रकाशक, रासलीलानुकरण के प्रवर्तक, ब्रजयात्रादिके सूत्रपात कर्ता श्रीश्रीभट्टजी के सम्पूर्ण जीवन का विस्तार से वर्णन श्लोकों में प्रस्तुत है। अब बाबा

ने इसे भाषानुवाद सहित छापा है। मूल्य ॥)

१३-ग्रन्थरत्नषट्कम्:- इसमें १-श्रीपादविश्वनाथचक्रवर्त्ति की मंत्रार्थदीपिका, २-श्रीश्रीप्रबोधानन्द सरस्वती कृत कामगायत्री-व्याख्या ३-श्रीश्रीजीवगोस्वामीप्रभु रचित अग्निपुराणान्तर्गत गायत्रीव्याख्या की विवृत्ति ४-श्रीश्रीपादरूपगोस्वामी कृत सूत्र-उपासना या वैष्णवपूजाविधि ५-श्रीश्रीजीवगोस्वामीप्रभु रचित युगलाष्टक ६-श्रीश्रीगोपालभट्ट रचित कृष्णप्रेमामृत इन छः ग्रन्थों को सन्निहित किया गया है, सभी सानुबाद होने से सर्वोपयोगा हो गई हैं। मूल्य ॥)

१४-मथुरामहात्म्य:-श्रीश्रीरूपगोस्वमीपाद को श्रीश्रीचैतन्यमहा-प्रभु की आज्ञा थी कि सम्पूर्ण शास्त्रों से संग्रहकर मथुरा महा-त्म्य लिखें, उनकी आज्ञापालन रुप पूर्णरूपसे परिश्रम पूर्वक आपने इसका प्रणयन किया है। मू०१० आना

१५-प्रेमसम्पुट:-भगवान्कृष्ण रसरूप आस्वाद्य है स्वाद ग्रहण कर्ता है श्रीप्रियाजी। भगवान् एकदिन सखीस्वरूप बनाकर राधिकाजी के पास जाते हैं और उनके परिकर में सम्मिलित होकर आस्वाद्यरस स्वयं अपने को आस्वादन करने को उत्कण्ठित होते हैं। प्रेम के रस का प्रवाह यहाँ देखने योग्य है। मूल्य ।)

१६-श्रीनिकुञ्जरहस्यस्तव:-वैष्णवजनों के लिये दैनिक पाठ के स्तोत्र साहित्य का सर्वोत्तम श्रेष्ठतम ग्रन्थ यह है। भाषानुवाद सहित यह ग्रन्थ प्रकाशितहै। मूल्य ।)

१७-श्रीगोवर्धनशतक:-श्रीगिरिराज की महिमा प्रकाश के लिये संसार का श्रेष्ठतम यह ग्रन्थ विष्णुस्वामीसंप्रदायाचार्य श्रीपाद-केशवाचार्यजी प्रणीत है सानुवाद है। मूल्य ।)

१८-नवरत्नम्:-श्रीपादगोस्वामी हरिरामव्यास प्रणीत यह ग्रन्थ मध्वाचार्य महोदय द्वारा प्रचारित नवप्रमेय (नव पदार्थों) की

पुष्टि के लिये श्रेष्ठतम ग्रन्थ है। श्रीकृष्णदासबाबा की कृपा से सानुवाद प्रकाशित है। मूल्य १५ नये पैसे

१६-सहस्रनामत्रयम् अथवाग्रन्थरत्ननवकम्:-इसमें १-कविकर्णपूर महोदय रचित श्रीकृष्णचैतन्यसहस्रनामस्तोत्र २-श्रीरूपगोस्वामी रचित श्रीकृष्णचैतन्यदिव्यसहस्रनामस्तोत्र ६-श्रीमन्नरहरि-सरकार ठाकुर रचित "श्रीकृष्णचैतन्यसहस्रनामस्तोत्र" ४-श्रीमद्-अद्वैताचार्य प्रभु विरचित श्रीगौराङ्गप्रत्यङ्गवर्णन नामक स्तव-राज ५-श्रीवासुदेवसार्वभौमभट्टाचार्य रचित "श्रीनित्यानन्द-नामद्वादशक" ६-श्रीगौरांगद्वादश--नाम ७-श्रीचैतन्यशतक ८-श्रीगौराङ्गअष्टोत्तरशतनामस्तोत्र एवं श्रीमन्महाप्रभु मुखपद्म बिनिर्गत "श्रीराधिकाअष्टोत्तरशतनामस्तोत्र" ये ६-ग्रन्थ संग्रहीत हैं। मूल्य ॥)

२०-श्रीश्रीमहाप्रभुग्रन्थावली:-इसमें महाप्रभु श्रीगौराङ्गदेव के स्वयं श्रीमुखपद्म विनिर्गत १-"शिक्षाष्टक" २-"प्रेमामृतरसायन-स्तोत्र" ३-"युगलपरिहारस्तोत्र एवं ४-"श्रीराधारसमञ्जरी" ये चार ग्रन्थ संग्रहीत हैं, मूल संस्कृत ग्रन्थ की भाषाटीका सहित प्रकाशित हैं। मू० ॥)

२१-स्मरणमंगलस्तोत्र:-श्रीपादरूपगोस्वामी रचित यह स्तोत्र पंडितप्रबर श्रीमधुसूदनगोस्वामीजी तथा श्रीपाददामोदर-गोस्वामीजी के पद्यमय अनुवाद साथ ही पद्मपुराण के पातालखण्ड वृन्दाबन महात्म्य का अध्याय जोड़ा गया है। यह भी सानुबाद ही प्रकाशित किया गया है। मू० १०आना

२२-श्रीमहामन्त्रव्याख्याष्टक:- १-श्रीपादजीवगोस्वामीजी की हरिनामव्याख्या २-श्रीपादरघुनाथदासगोस्वामिजी की हरि-नाममहामन्त्रव्याख्या ३-श्रीहरिदासठाकुर तथा श्रीअद्वैतप्रभु की प्रसंग रूप महामन्त्रव्याख्या ४-श्रीचैतन्यदासजी

महामन्त्रव्याख्या ५–हरिनामषोडष अथवा महामन्त्रषोडष ६–हरेकृष्णमहामन्त्रकवच ७–श्रीमन्नरहरिसरकारठाकुर रचित "महामन्त्रविधि" ८–श्रीश्रीपादगोपालगुरु रचित "हरिनाम–महामन्त्रव्याख्या" इन आठ ग्रन्थों का सन्निवेश है। आठ आचार्यों की एक ही महामन्त्र की व्याख्या होने से इसका विवेचन इतने अच्छे प्रकार से हुआ है कि संसार में फिर इस विषय का कोई ग्रन्थ देखने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। मू० ।)

२३–भक्तिरसतरङ्गिणीः–श्रीश्रीपादश्रीनारायणभट्टगोस्वामि कृत है। "भक्तिरसामृतसिन्धु" और "उज्वलनीलमणि" जैसे ग्रन्थरत्नों का यदि सम्पूर्णरस कोई आस्वादन थोड़े काल में ही करना चाहें तो उन्हें इस ग्रन्थ को पढ़कर मिल सकता है। मू०१)

२४–श्रीश्रीराधाकृपाकटाक्षस्तोत्रः–तथा इसी के साथ राधाकुण्ड उत्त्पत्ति वर्णन रखा गया है। मू० =)

२५–श्रीचैतन्यचरितामृतः–श्रीश्रीकृष्णदासकविराजगोस्वामी पाद रचित यह ग्रन्थ वंगभाषा में ही सुलभ था। समस्त ब्रज के वैष्णवों के आग्रह पर श्रीश्रीपाद नारायणभट्टजी महाराज की शिष्य परम्परा में सुवलश्यामजी ने ३५०बर्ष पूर्व इसे हिन्दी लिपि में ब्रजभाषा में करके चैतन्यसम्प्रदाय को एकनिधि दी थी। यह ग्रन्थ अद्यावधि अप्राप्य था अतः श्रीकृष्णदासबाबा ने इसे छापकर मानो बड़ी भारी एक कमी को पूरा कर दिया है। मू० ४॥)

२६–ब्रजमण्डलदर्शनः– ब्रजभक्तिविलास के प्रकाशित होने पर भक्त परिकर ने इसके विशाल आकार को देखकर कोई सार रूप छोटा ग्रन्थ ब्रजपरिचय संबन्ध में छापने को आग्रह किया, बाबा कृष्णदास जी महाराज ने स्तुत्य परिश्रम कर तत्सम्बन्धित

तीस-पैतीस ग्रन्थों को एक साथ सामने रख ब्रजमंण्डल संम्बन्ध में सार रूप में जो कुछ है सब इसमें लिख दिया हैं। ब्रजपरिचय और परिक्रमा करने वालों को हिन्दीभाषा का यह ग्रन्थ एक मात्र दर्शन कराने वाला साहित्य ही है। मू० १)

२७-मुरलीमाधुरी:-मुरली को आलम्ब मानकर माधुर्य रस को पूर्ण परिपक्व अवस्था तक पहुचाने के लिये जो स्तुत्य प्रयास इसमें किया गया है वह अनूपम और अद्भुत ही है। एक एक भाव को एक एक प्रकरण बनाया गया है, अनेक ग्रन्थों को माधुर्य सुन्दरतम समुच्चय अनूठा है। मू० ।)

२८- नत्यक्रियापद्धति:-यह चैतन्य सम्प्रदाय के भजन, पूजन, पाठ की एक मात्र पुस्तक है। आवश्यकीय नित्यपाठ किये जाने वाले अष्टक, स्त्रोत्र, वंदन, पूजन आदि का श्रेष्ठतम संग्रह है। मू० १० आना

३६-श्रीप्रियादास ग्रन्थावली:-भक्तमाल के टीकाकार श्री प्रियादासजी महाराज विरचित यह ग्रन्थ संग्रह अनन्य रसिक भक्तों को अनन्त सुख देने वाले हैं। इसमें रसिकमोहनी में -रसिकों की स्थिति और अवस्था का आनन्द वर्णन है, २-अनन्यमोदनी में भक्तिकी अनन्यता का पूर्णतम रूप से प्रतिपादन है। ३-चाहवेली में भक्तों की प्रवल उत्कंण्ठा की अवस्था में हृदय गत-भावों का विश्लेषण एवं ४-भक्त सुमरणी में श्रीभक्तमाल में वर्णित भक्तों का नाम तथा उनकी महिमा सूक्ष्मतमरूप से वर्णन की गई है। मू० ।)

३०-श्रीरामहरिग्रन्थावली:-प्रसिद्ध भक्त कवि रामहरिजी के ८ ग्रन्थों का यह समुच्चय भक्तगणों को आनन्द में सरावोर करने वाला है। इस में १ वुद्धिविलास २ सतहंसी ३ बोधबावनी ४ रसपच्चीसी ५ लघुनामावली ६ लघुशब्दावली ७ प्रेमपत्री

८-ध्यानरहसि। इनमें लघुनामावलि एवं लघुशब्दावली यह दो ग्रन्थ परम उपादेय हैं। इनमें ब्रजभाषा के संस्कृत तत्सम शब्दों सधुक्कड़ीभाषा के अव्यवस्थित शब्दों एवं अनन्यरसिकों के हृदयोद्भूत अनूठेशब्दों का अर्थ खोलकर ब्रजभाषा के प्राचीनतम रूप को भी सुलभ कर दिया है। अन्य ६ ग्रन्थ भक्त व अनन्य रसिकों को आनन्द निर्झरिणी के रहस्य हैं। मू० ३१ न० पै०

३१-गीतगोविन्दपदः-"गीतगोविन्द" के संस्कृतग्रन्थ होते हुए भी, श्रीजयदेवजी की ख्याति और गीतगोविन्द की महिमा सौरभ तत्कालीन समाज में गुलाबगंध की तरह फैलगई। उसी समय के समाज ने उन्ही रागरागनियों में इस ग्रन्थ को ब्रजभाषा में सुनने के लिये प्रबल इच्छा प्रकट की तो उसी के फल स्वरूप यह ग्रन्थ आज से ४०० वर्ष पहले ही ब्रजभाषा में उन्हीं छन्द, राग,रागनियों में श्रीकविभूषण रामरायजी द्वारा अनुप्राणित हो उठा। मूल्य।)

३२-गीतगोविन्द (भाषा):-यह ग्रन्थभी उक्त परिपाटी में श्रीरसजानी वैष्णवदासजी के परिश्रम का फल है। मूल्य।)

३३-संप्रदायबोधिनी:-भक्तमाल के प्रथम प्रसिद्ध टीकाकार श्रीप्रियादासजी के गुरु श्रीपाद कविवरमनोहरजी इसके रचयिता हैं। इसमें चारों सम्प्रदायों की क्रमसे गुरुप्रणाली दीगई है। ब्रजभाषा में इसकी रचना की गई है। मूल्य=)

३४-रसिकजीवनी:- श्रीकविश्रेष्ठ श्रीमनोहरदासजी ने कई अनन्यभक्त कवियों के सरसपदों का संग्रह करके यह एक सरस संकलन उपस्थित किया है। मूल्य।)

३५-क्षणदागीतिचिन्तामणि :- मनोहरदासजी ने इसको संकलन किया है। इसमें कृष्ण प्रतिपदा से प्रारम्भ कर एकमास पर्यन्त प्रत्येक तिथि में श्रीराधागोविन्ददेवजी की लीलाओं का

पृथक पृथक वर्णन है। भक्तसमाज को उन्हीं तिथियों में उन लीलाओं का स्मरण, उस भाव में सेवा करने को यह एक अनुपम ग्रन्थ है। इसमें अनेक भक्तकवियों के पदों का संग्रह है स्वयं भी ग्रन्थकार ने अनेकानेक पदों की रचना कर इसमें सम्मलित किया है। मूल्य ॥)

३६–कहानीरहसि एवं कुंवरिकेलि :– श्रीपादनारायणभट्टजी के वंशज गोस्वामी मुरलीधरजी के शिष्य ललित सखीजी इसके रचयिता हैं। इसमें वात्सल्यरसका अति सुन्दर रूप से वर्णन किया गया है। मां श्रीकीर्तिदाजी नित्यप्रिया श्रीराधिकाजी को स्वप्न कहानी सुनाती हैं। इसमें माधुर्यभाव का अत्यन्त एवं मर्मान्तक स्फुटन है। मूल्य ।)

३७–गोविन्दलीलामृतभाषा:–गोविन्दलीलामृतभाषा के रचयिता श्रीकविशीतलदासजी हैं एवं पद्यावलीभाषा के रचयिता श्रीशिवपदजी हैं। गोविन्दलीलामृतभाषा में संस्कृतके विशालकाय गोविन्दलीलामृत ग्रन्थ का अति संक्षेप रूप भाषा में है। इसमें राधागोविन्द की अष्टकालीन लीलाओं का वर्णन है। सरस पदों में इसकी रचना की गई है। पद्यावलीभाषा में नानाभावों के पदों का सन्निवेश है। मूल्य ।)

३८–स्मरणमंगलभाषा:–इसके रचयिता श्रीश्रीसंतप्रवर गुणमंजरीजी हैं। इसमें संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रन्थ गोविन्दलीलामृत के आधार पर संक्षेप में राधागोविन्द की भक्त सुखदेनी दैनन्दनी लीलाओं का वर्णन है। मूल्य ।)

३९–ब्रजयात्रा एवं चरणपूर्णानन्दजी ग्रन्थावली:–ब्रजयात्रा के रचयिता गोस्वामी श्रीसुन्दरलालजी हैं। इसमें ब्रज परिक्रमा का संक्षेप में बर्णन है। ब्रजयात्रा के लिये यह एक अनुपम ग्रन्थ है। दूसरे ग्रन्थ के रचयिता चरणपूर्णा नन्दजी हैं। यह ग्रन्थ लगभग

४०० वर्ष का प्राचीन है। इसमें पाँच प्रकरण हैं (१) विवेकदोहावली (२) नाममहात्म्य (३) कर्मसाधन (४) वैराग्यसाधन एवं (५) तत्वविचार। मूल्य ।)

४०–गौरनामरसचम्पू तथा लघुगोपालचम्पूभाषाः–इन दोनौ ग्रन्थरत्नों के रचयिता श्रीजीवगोस्वामीजी के शिष्य कृष्णकवि हैं। पहले ग्रन्थ में नाना प्रकार से ज्ञान, वैराग्य, नीति, साधनादि उपदेश हैं। लघुगोपालचम्पू में जीवगोस्वामीविरचित गोपाल चम्पू का संक्षेप में वर्णन है। ब्रजभाषा में प्रकाशित ये दो ग्रन्थ अति अनूठे हैं। मूल्य ॥=)

(४१) किशोरीदासजीकीवाणीः–भक्तकविकिशोरीदासजी के द्वारा विरचित गौरांगदेव एवं राधाकृष्ण के अनेक भावों के पदों का इसमें संकलन है। इसके पद बहुत सरस एवं मार्मिक हैं। ब्रज में विशेष कर बरसाने में इनके पदों का उत्सवों के समाज में गान किया जाता है। मूल्य ॥=)

४२–हरिलीलाः–इसके रचयिता जयदेवगोस्वामीजी के वंशज श्रीब्रह्मगोपालगोस्वामी हैं। इसमें राधागोविन्द की लीलाविहार का वर्णन है। मूल्य =)

४३–भक्तनामावलीः–रचयिता वृन्दावनदासजी हैं। इसमें दोहों में भक्तों की महिमा गाई गई है। मूल्य दो आना

४४–विलापकुसुमाञ्जलिः–रचयिता श्रीवृन्दावनदासजी हैं। श्रीरघुनाथदास गोस्वामी के द्वारा संस्कृतभाषा में विरचित विलापकुसुमाञ्जलि का ब्रजभाषा पद्य में यह अनुवाद है। अनेक छन्दों से इसकी रचना की गई है। भाषा अत्यन्त मार्मिक है। इसमें राधागोविन्द की सेवा की प्रार्थना अत्यन्त करुण रस से की गई है। मूल्य ।)

४५-प्रेमभक्तिचन्द्रिका:-संतप्रवर श्रीवृन्दावनदासजी ने ब्रज भाषा में अनेक छन्दों में इसकी रचना की है। बंगभाषा में प्रसिद्ध नरोत्तमठाकुरमहाशय की प्रेमभक्तिचन्द्रिका का यह अनुवाद है। मूल्य ।)

४६-प्रार्थना:-यह श्रीनरोत्तमठाकुरमहाशय के द्वारा बंग-भाषा में विरचित "प्रार्थना" का ब्रजभाषा में पद्यमय अनुवाद है। इसी के साथ मूलग्रन्थ भी सन्निहित है। मूल्य ॥)

४७-भाषाभागवत (भाग १):-माहात्म्य प्रथम एवं द्वितीय स्कंध। श्रीमद्भागवतजी का यह अनुवाद रसजानी वैष्णवदास जी के द्वारा रचित है। समग्र भागवत को उन्होंने दोहा, चौपाई, छन्दों में, ब्रजभाषा में, अक्षरशः अनुवादित किया है। भाषा अत्यन्त सरल है। मूल्य ॥)

४८-भाषाभागवत (भाग २) :-दशम, एकादश, द्वादश स्कन्ध। मूल्य १॥)

४९-माधुरीबाणी:-रूपगोस्वामिजी के शिष्य माधुरीजी इसके रचयिता हैं। इसमें उत्कंठामाधुरी (१) बंशीवट-बिलासमाधुरी (२) केलिमाधुरी (३) वृन्दाबनविहारमाधुरी (४) दानमाधुरी (५) मानमाधुरी (६) होरीमाधुरी (७) प्रियाजू की बधाई आदि सन्निवेशित हैं। ब्रज में माधुरीजी की वाणी अति प्रसिद्ध हैं। जहाँ-तहाँ माधुरीवाणी का सुन्दर रूप से गान होता है। मूल्य दस आना

५०-श्रीबल्लभरसिकजी की वाणी:-इसमें हिंडोला, पवित्रा, एकादशी, वर्षगाँठ, साँझी, दशहरा, दिवाली, होली, बसन्त, फूलडोल, चन्दनयात्रा, रथयात्रा, रास, जलविहारादि उत्सवों का सरस वर्णन है। इनमें माँझ शब्द का जोड़ है। बल्लभरसिकजी का माँझ सर्वोपरि है। इनकी रचना परिपाटी अति अद्भुत है।

सर्वत्र यमकानुप्रास भरा पड़ा है। ब्रजभाषा में यमकानुप्रास प्रयोग में यह कवि सिद्धहस्त हैं। मूल्य छः आना

५१–गदाधरभट्ट की वाणी:–श्रीपादगदाधरभट्टजी संस्कृत के धुरन्धर विद्वान् एवं भागवत के अद्वितीय वक्ता थे। ब्रजभाषा में भी इन्होंने वहुत पदों की रचना की। उन पदों का संग्रह इसमें मिलेगा। गदाधरभट्टजी की वाणी विद्वानों में बहुत प्रसिद्ध है। मूल्य ।॥)

५२–सूरदास मदनमोहनजी की वाणी:–यह ब्रजभाषा क्षेत्र में उच्चस्थान आसीन है। सूरदासजी मदनमोहन की वाणी का अनुसन्धातृ विद्वान समाज में शीर्ष स्थान है। उनके पदों का फुटकर रूप में संग्रह किया गया है। मूल्य ।॥)

नोट–गदाधरभट्टजी की वाणी एवं सूरदास मदनमोहनजी की वाणी, इन दोनों ग्रन्थों का द्वितीय संस्करण राधेश्याम गुप्ता ने प्रकाशित किया है।

५३–अष्टयाम:–ब्रजभाषा में पद्यमय यह अद्भुत ग्रन्थ है। इसके रचयिता श्रीवृन्दाबनचन्द्रदासजी हैं। इसमें गोविन्द-लीलामृत के आधार पर राधागोविन्द की अष्टयाम लीला का विस्तार रूप से वर्णन है। इसकी रचना परिपाटी अत्यन्त उच्चस्तर पर है। भाषा बहुत मार्मिक है। ब्रजभाषा में इसकी रचना अद्वितीय है। मूल्य १।)

५४–विदग्धमाधववार्त्ता:–श्रीरूपगोस्वामि विरचित विदग्ध माधवनाटक का ब्रजभाषा गद्य में अनुवाद है। वार्त्ता रूप में यह अति सरस ग्रन्थ है। इसके पाठ से चित्त में अत्यंत कौतूहल उपस्थित होता है। मूल्य ॥)

५५–ब्रजभाषाग्रन्थत्रय:–इसमें (१) चैतन्यचन्द्रामृतकणिका

(२) रासपंचाध्यायी (३) भजनपद्धति ये तीन ग्रन्थ मौजूद हैं। ॥)

५६-ब्रह्मसंहितादिग्दर्शिनी टीका की भाषा:-कृष्ण सिद्धांत का ज्ञान कराने में इस ग्रन्थ से बढ़कर कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं है। इस ग्रन्थ को दक्षिणयात्रा के समय स्वयं श्रीगौरांगदेव हाथ से लिख कर लाये थे। श्रीजीवगोस्वामीजी ने संस्कृत में अकाट्य युक्तियुक्त इसकी टीका की है। परन्तु संस्कृत भाषा में होने से यह टीका सर्व उपयोगी नहीं थी। अतः श्रीराम-कृपाजी ने ब्रजभाषा में पद्यमय अनुवाद किया है।

प्रकाशनसंख्या १०६ मूल्य ॥=)

गौरहरि प्रेस से प्रकाशित पुस्तकें

५७-सामान्यविरुदावलीलक्षणम:— संस्कृतसाहित्य के भण्डार में विरुदावली एक अमूल्य रत्न है। अनेक प्रकार के छन्दों में इसकी रचना की जाती है। साहित्यदर्पण में "राजस्तुतिर्विरुद यथा विरुदमणिरत्नमाला" ऐसा कह कर उद्देश्य किया है। चैतन्यसम्प्रदाय में कई विरुदावली देखने में आती हैं। यथा-गोविन्दविरुदावली, गौराङ्गविरुदावली, गोपालविरुदावली एवं निकुञ्जविरुदावली आदि। शास्त्रोक्त लक्षणों से इसकी रचना की जाती है इसीलिए रूपगोस्वामी जी ने इसकी रचना की है। प्रकाशनसंख्या ११० मू० ।)

५८-स्वकीयात्वनिराशविचार तथा परकीयात्वनिरूपणम्:- श्रीश्रीविश्वनाथचक्रवर्तीजी के इन ग्रन्थरत्नों में श्रीश्रीराधा-गोविन्द के स्वकीयात्वभाव का खण्डन एवं परकीयाभाव का निरूपण अति सुन्दर एवं युक्तियुक्त रूप में प्रकट है।

मूल्य ।)

प्रकाशनसंख्या ११२-१३

५९-(लघु) श्रीश्रीनारायणभट्टचरितामृतम् :- इसमें श्रीश्री-महामहिम नारायणभट्टजी का सम्पूर्ण चरित्र अल्पतम शब्दों

में प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है।

प्रकाशन संख्या १११ मूल्य ।)

६०—श्रीमाधवेन्द्रपुरी एवं बल्लभाचार्य:—इसमें श्रीश्रीनाथजी के प्राकट्य के पश्चात् उनकी सेवा आदि के हस्तान्तरण के इतिहास का रहस्योद्घाटन एवं श्रीश्री माधवेन्द्रपुरीजी एवं बल्लभाचार्यजी के सम्बन्ध को प्रामाणिकरूप से प्रस्तुत किया गया है। यह ग्रन्थ पहिले श्रीराधेश्यामबागची ने बंगभाषा में प्रकाशित किया था, उसके हिन्दी अनुवाद के रूप में यह ग्रन्थ उपस्थित है। प्रकाशन संख्या ११४ मूल्य ।)

६१—श्रीमाधवदासजी की बाणी तथा आदर्श जीवनी :— श्रीश्रीमाधवेन्द्रपुरीजो के शिष्य श्रीमाधवदासजी जिनका भक्तमाल में वर्णन है। कहते हैं कि इनके भक्तिभाव से प्रसन्न हो श्रीजगन्नाथजी ने रूप बदलकर इनकी सेवा की थी, अतः इन्हीं को जगन्नाथीमाधवदासजी भी कहा है। इस ग्रन्थ-रत्न में उनकी वाणियों का संग्रह है। साथ में पूँछरी निवासी बाबा श्रीगौरगोविन्ददासजी का जीवन चरित्र भी प्रस्तुत है। ग्रन्थ संख्या ११५—११६ मूल्य १)

६२—श्रीगोविन्ददेवजी के सेवक चैतन्यदासजी के द्वारा विरचित "भक्तितत्वप्रकाशिका" श्री श्रीगोस्वामी गोपीलालजी विरचित 'गीतिविंशतिका', श्रीमहामहिम नारायणभट्टजी विरचित "भक्तिविवेक" एवं श्रीपाद जीवगोस्वामिजी विरचित "अनर्पितचरी चिरात्" श्लोकव्याख्या, इस एक ही प्रति में चार ग्रन्थ प्रस्तुत हैं। ग्रन्थ संख्या ११७ से १२० मूल्य ॥)

६३—आमोदमहाकाव्य :— श्रीश्रीअनूपनारायण भट्टाचार्य-अपने समय के दर्शनशास्त्र के धुरन्धर पण्डित एवं रसिक थे। इस महाकाव्य में आपने श्रीश्रीराधागोविन्द की लीलाओं को

सरसतम रूप में प्रस्तुत किया है। पूर्वराग,मिलन, पुष्पचयन आदि। ग्रन्थ संख्या १२१ मूल्य ॥)

६४–श्रीकृष्णकौतुकम्:–श्रीमन्महाप्रभु के परिकर श्रीश्री परमानन्दपाद महोदय इसके रचयिता हैं। इस ग्रन्थ में ६ सर्ग हैं। प्रथम सर्ग में गोचारणविहार, २ सर्ग में श्रीराधा कृष्ण के अनुराग का उदय, ३ सर्ग में श्रीराधाकृष्ण का मिलन, चतुर्थ सर्ग में रासविहार, पञ्चम में चन्द्रावलिप्रसंग, षष्ठसर्ग में दधिदानविहार, सप्तम – अष्टम सर्गों में ऋतुविहार, एवं नवम में माकन्दमण्डपबिहार का वर्णन है। १६४६ संवत् की एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति से इसका प्रकाशन किया गया है। इसमें नन्दिनी, वृन्दा, रागिणी, प्रभृति के प्रसंगों को सरस एवं अद्भुत रूप में प्रस्तुत किया है। यह संस्कृत साहित्य भंडार में एक अनूठा ग्रन्थ है।

ग्रन्थ संख्या १२२ मूल्य ॥।)

६५–श्रीचैतन्यभागवत:– श्रीवृन्दावनदासठाकुर श्रीनित्यानन्द प्रभु के परिकर हैं। आपने विशालरूप से श्रीचैतन्यमहाप्रभूजी का चरित्र जो वंगभाषा के पयारछन्द में वर्णन किया है। उसे बाबामहाराज ने उसी पयारछन्द को उसी भाषा में देवनागरीलिपि में प्रस्तुत करवाया है। रसिक जनों के आनन्द वर्धनार्थ इसमें हर पयार के साथ उसका हिन्दी अनुवाद भी सरस रूप में वर्णित है। ग्रन्थ का वृहद्रूप होने से इसे तीन खण्डों में प्रकाशित किया गया है।

ग्रन्थ संख्या १२३ संपूर्ण का मूल्य १०)

६६–गोपालतापिनीउपनिषद्भाष्य :— श्रीमन्महाप्रभु के परिकर श्रीप्रबोधानन्दसरस्वतीजी ने गोपालतापिनीउपनिषद् पर दार्शनिक सिद्धान्तों के माध्यम से विचार किया है।

ग्रन्थ संख्या १२४ मूल्य ॥)

श्रीश्रीराधारमणो जयति

श्रीरामशिष्यं कटके सुजन्मं पौगण्डकाले गुरुसान्निधाप्तम् ।
गौरोदयोर्व्यां परियान्तमाशु श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।१

गौराङ्गदासादिभिरुन्मदेन वृन्दावने वासकृतं सहर्षम्।
भावानुरागेण वदन्तमुच्चैः श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।२

गौडीयभक्तै रचिता रसाढ्या उद्दीपिता ग्रन्थवरा हि येन ।
साहित्यरत्नं ब्रजभूषणं तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।३

विज्ञैः समेतं सुमनःसरस्स्थं ग्रन्थानुलेखं परिशोधयन्तम् ।
सद्भक्तिसिद्धान्तनिधिं सनिष्टं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।४

सौम्यं कृपालुं मधुभाषकण्ठं शुक्लाम्बरं क्षीणतनुं नितान्तम् ।
निःसङ्गमानन्दवपुं महान्तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।५

लीलास्मरन्तं सततं जपन्तं देवाग्र उन्मत्तपरं नटन्तम् ।
संकीर्तनामोदमोदं प्रसिद्धं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।६

भक्ताधरोच्छिष्टललातिचित्तं स्नेहाभिमूर्तिं चलनातिधीरम्
भक्तानभक्ताञ्च नमन्तमुत्कं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।७

रोमाञ्चकम्पाश्रुतरङ्गयुक्तं मुग्धं प्रशान्तं नितरां हसन्तम् ।
वैराग्यसिन्धुं करुणैकबन्धुं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।८

इति श्रीश्रीवृन्दावननिवासिना श्रीश्रीवृन्दावनदासेन विरचितं
श्रीश्रीकृष्णदासाष्टकं सम्पूर्णम्